घर को, मगर, ग़रीब के सूना नहीं किया।
उलझी हुई अदावतें सुलझाईं तो, मगर,
मैंने ज़मीं को ख़ून का दरिया नहीं किया।
आख़िर कहें तो क्यों कहें उसको ग़लत 'ज़हूर',
जो कह रहा है मुफ़लिसी में क्या नहीं किया!

**(चार)**

तालिब हैं जो मंज़िल के ख़ारों पे भी चलते हैं,
मंज़िल वो नहीं पाते जो राह बदलते हैं!
ममता की तपिश से तब, माँ-बाप पिघलते हैं,
जब बच्चे खिलौनों की ख़्वाहिश में मचलते हैं।
कहने को तो कहते हैं ठोकर में ज़माना है,
हैं लोग वो बेहतर जो गिरते हैं, सम्हलते हैं।
ये कैसी सियासत है जो मेरी इयादत को,
वो चेहरा बदलते हैं जब घर से निकलते हैं।
इनसान की फ़ितरत है कुव्वत को बयाँ करना,
सूरज की तरह, लेकिन, ये जिस्म तो ढलते हैं।
ऐसे भी हैं कुछ माली गुलशन में 'ज़हूर' अब तो,
लोग उनकी रज़ा से ही कलियों को मसलते हैं!

**(पाँच)**

उसका अपना यहां मकान भी था,
आम के पेड़ का निशान भी था।
साथ छूटा तो हमने मान लिया,
फ़ासला अपने दरमियान भी था।
क्या सबब है कि उसकी महफ़िल में,
आदमी एक बेज़ुबान भी था।
जब उठे वालदेन के साए,
तब लगा सिर पे आसमान भी था।
धूप ग़ुरबत की सिर पे थी तो 'ज़हूर'
आस का एक सायबान भी था।

**(छह)**

कौन टकराये तूफ़ां के धारों से अब,
नाख़ुदा डर रहा है किनारों से अब।
वक़्त की आंच ने उसको झुलसा दिया,
बात करने लगा है इशारों से अब।
कुछ नहीं दे सकीं इन से नज़दीकियां,
दूरियाँ ठीक हैं ताजदारों से अब।
राज़दारों ने ही राज़ ज़ाहिर किये,
रिश्ते-नाते कहां राज़दारों से अब?
है गुलों का बदन आज क्यों दाग़-दाग़,
कौन पूछेगा ये बात ख़ारों से अब!
तुम सहारों को समझे नहीं हो अभी,
लोग डरने लगे हैं सहारों से अब।
ग़मगुसारी निभायेंगे रसमन 'ज़हूर',
ये ही उम्मीद रख ग़मग़ुसारों से अब।

**(सात)**

ज़िन्दगी है बड़ी सौग़ात सम्हल कर चलिए,
एक ये भी है बड़ी बात, सम्हल कर चलिए!
सरफ़रोशी की तड़प ले तो चली है, लेकिन,
हैं बहुत राह में ख़तरात, सम्हल कर चलिए!
उसको दुनिया की तलब, इसको तलाशे-उक़बा,
गर्म हैं आज ये जज़्बात, सम्हल कर चलिए!
रहनुमाई का हुआ आज फिर उसका दावा,
अब बिगड़ जायेंगे हालात, सम्हल कर चलिए!
जुल्म की ख़ाक चिताओं से उड़ी ये कह कर,
छोड़िए ओछे ख़यालात, सम्हल कर चलिए!
वो गया वक़्त 'ज़हूर' आज यहाँ होती है,
आए दिन ख़ून की बरसात, सम्हल कर चलिए!

**(आठ)**

दुश्मनी जो पालता है दोस्ती के साथ-साथ,
क्या निभाएगा वो यारी दुश्मनी के साथ-साथ!
आपकी वादा-ख़िलाफ़ी और मेरा एतबार,
क्या तसादुम चल रहा है ज़िन्दगी के साथ-साथ।
हैं दरख़्तों की तरह क़ायम यहाँ जिसके उसूल,
कारवां चलते हैं ऐसे आदमी के साथ-साथ।
कल जहां पगडंडियां थीं, आने-जाने के लिये,
आज सड़कें चल रही हैं उस गली के साथ-साथ।
क़र्ज़, बीमारी, दवा, बेटी की शादी मेरे घर,